अर्थशास्त्र का शिक्षक
(TEACHER OF ECONOMICS)

शिक्षक की वह धुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था घूमती है। शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माता होता है। एडमस महोदय ने तो शिक्षक को मनुष्य का निर्माणकर्ता कहा है। शिक्षक को बालक के समक्ष सदैव एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए, जिसका अनुकरण कर बालक अपने जीवन को समुन्नत कर सकेगा। अर्थशास्त्र यद्यपि मानव-जीवन के आर्थिक पहलू से सम्बन्धित है फिर भी सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में विषय-ज्ञान के अतिरिक्त अन्य गुणों का होना आवश्यक है। अर्थशास्त्र-शिक्षक में निम्नांकित गुणों का होना आवश्यक है:—

1. विषय का व्यापक ज्ञान — अर्थशास्त्र-शिक्षक में जिस बात की सर्वाधिक अपेक्षा की जाती है, वह है- विषय का पूर्ण ज्ञान। उसे अपने विषय का विद्वान होना चाहिए तथा इस विषय के शिक्षक को उन विषय का भी सामान्य ज्ञान रखना चाहिए, जिनका इनसे घनिष्ठ सम्बंध है, उदाहरणार्थ- भूगोल तथा वाणिज्य। अर्थशास्त्र के शिक्षक को विषय-ज्ञान के साथ-साथ सकल सामाजिक जीवन व्यतीत करने में जिन बातों तथा सिद्धांतों की आवश्यकता होती है, उनका भी ज्ञान रखना चाहिए।
2. शिक्षण-व्यवसाय में निष्ठा — शिक्षक को अपने व्यवसाय में पूर्ण निष्ठा रहनी चाहिए तभी वह कक्षा में तन्मयी ढंग से छात्रों को पढ़ा सकेगा। अर्थशास्त्र के शिक्षक को जब विषय एवं व्यवसाय में निष्ठा नहीं होगी, तब वह समाज की आर्थिक समस्या का निदान नहीं हो पायेगा। इसलिए उसमें व्यावसायिक निष्ठा का होना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

3. शिक्षण कार्य में प्रशिक्षित होना — अर्थशास्त्र के शिक्षक को सामान्य शिक्षा के सिद्धांतों एवं विधियों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। यदि अर्थशास्त्र के शिक्षक को प्रशिक्षण नहीं मिलेगा तो वह आधुनिक शैक्षिक विचार धारा तथा विविध नवीन पद्धतियों से अपने को अवगत नहीं कर पायेगा। किस स्तर पर किस शिक्षण विधी का प्रयोग उचित है, इसका निर्णय वह तभी कर पायेगा जब वह स्वयं प्रशिक्षित रहेगा।

4. समसामयिक साहित्य तथा घटना से अवगत होना — अर्थशास्त्र के शिक्षक को समसामयिक घटनाओं की जानकारी होना परमावश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में वह वर्तमान आर्थिक समस्याओं तथा वर्तमान जीवन की आर्थिक समस्याओं को समझने एवं अन्य हल निकालने में असफल रहेगा। इसके अवगत होने के लिए उसे दैनिक समाचार-पत्र तथा साप्ताहिक पत्रिकाओं का अध्ययन करना आवश्यक है। भारतीय आर्थिक स्थिति को जान के लिए उसे 'Government of India', Reports, Economic Times, Eastern Economics" पत्रिकाओं का अध्ययन करते रहना चाहिए। इनके अध्ययन से वह प्रचलित तथा तत्कालीन आँकड़ों तथा तथ्यों की प्राप्ति कर सकता है। इसके अतिरिक्त उसे विभिन्न 'सेमिनारों' में भाग लेते रहना चाहिए।

5. उदार तथा व्यापक दृष्टिकोण — अर्थशास्त्र के शिक्षक का उदार तथा व्यापक दृष्टिकोण होना चाहिए। तार्किक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उसे किसी तथ्य को ग्रहण करना चाहिए। इसे वह उस तथ्य, घटना तथा सिद्धान्त का प्रतिपादन छात्रों के समक्ष तटस्थ ढंग से कर सकेगा। वह विभिन्न देशों की आर्थिक समस्याओं की

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

विवेचना एवं उनकी तुलना करके छात्रों में अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण उत्पन्न कर सकता है इस तरह, जब तक उसका दृष्टिकोण व्यापक नहीं होगा, तब तक वह अपने छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण उत्पन्न नहीं कर सकता है।

6. व्यावहारिकता — अर्थशास्त्र के शिक्षक को व्यावहारिक होना चाहिए, क्योंकि अर्थशास्त्र एक व्यावहारिक तथा जीवनोपयोगी विषय है। यह शास्त्र कला के रूप में आचरण के व्यवहार पर बल देता है। अर्थशास्त्र का शिक्षक जिन सिद्धांतों एवं नियमों का विवेचना छात्रों के समझ प्रस्तुत करें, उसे उनका व्यावहारिक पक्ष भी स्वयं व्यवहार के रूप में लाकर प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे वे अनुकरण करके उनको दैनिक जीवन में व्यवहार में ला सकें।

7. शिक्षक का व्यक्तित्व — अर्थशास्त्र के शिक्षक में व्यक्तित्व के निम्नलिखित गुण होने चाहिए — (i) सहयोग तथा धैर्य, (ii) नैतिक आचरण, (iii) तार्किक चिन्तन (iv) निष्पक्षता (v) जीवन शक्ति, (vi) अच्छा स्वास्थ्य, (vii) अच्छा स्वर, (viii) चातुर्य, (ix) मौलिकता (x) आत्म-नियन्त्रण, (xi) उत्साह एवं तत्परता, (xii) आशावादिता (xiii) नेतृत्व - क्षमता, (xiv) आर्थिक क्रियाओं में सहयोग की शक्ति, (xv) संगठन करने की क्षमता, (xvi) सहानुभूति (xvii) नियमितता तथा अनुशासन, (xviii) परिश्रमी तथा जिज्ञासु, (xix) पथ-प्रदर्शन की क्षमता।

8. शिक्षक का शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ्यक्रम, विद्यालय संगठन और भवन सामग्री तथा शिक्षा प्रणाली अध्यापन के प्रमुख अंग हैं। परन्तु, ये सभी तब तक निष्प्राण रहते हैं जब तक शिक्षक को सजीव व्यक्तित्व द्वारा उनमें प्राण-प्रतिष्ठा नहीं कर दी जाती।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

रेमॉण्ट (Raymont) का मत है कि "अध्यापक को उन सभी बातों का त्याग करना चाहिए जो तुच्छ एवं हीन हों; क्योंकि उसी पर समस्त छात्रों की दृष्टि लगी रहती है। शिक्षक अपने छात्रों पर अपना प्रभाव डालने से नहीं बच सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि वह सदैव उच्च आदर्शों एवं विचारों को मन, वचन तथा कर्म से व्यवहार में लाये, जिसका बालकों पर सर्वोत्तम प्रभाव पड़ सके। अतः उसमें कुछ विशिष्ट शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक गुणों की रहना अपेक्षित है।"

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर शिक्षक के प्रमुख गुणों की विवेचना हम (1) वैयक्तिक गुण तथा (2) व्यावसायिक गुण - इन दो शीर्षकों के अंतर्गत कर सकते हैं।

(1) वैयक्तिक गुण (personal qualities) —

(i) उत्तम स्वास्थ्य एवं जीवन-शक्ति — शिक्षक का गुण यह है कि उसका स्वास्थ्य उत्तम हो। परीक्षणों के आधार पर यह देखा गया है कि स्वस्थ शरीर का स्वस्थ मस्तिष्क के साथ उच्च प्रकार का संबंध होता है। यदि शिक्षक का स्वास्थ्य खराब है, तो वह सफलतापूर्वक शिक्षण-कार्य नहीं कर सकता; क्योंकि शक्ति एवं स्फूर्ति शिक्षक को कार्य में आशावादिता, उत्साह एवं जीवन-शक्ति लाती है।

(iv) उत्तम चरित्र एवं दृढ़-संकल्प — एक राष्ट्र-निर्माता होने के नाते शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसका चरित्र उत्तम हो और उसमें मिशनरियों की भाँति अपने कार्य के लिए उत्साह हो।

(v) नेतृत्व की भावना — शिक्षक में नेतृत्व की क्षमता होना भी आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(viii) बौद्धिक जागरूकता — शिक्षकों को स्वास्थ्य को बल पर आत्मविश्वास को जाग्रत करना चाहिए।

(ix) शिक्षक का दृष्टिकोण उदार हो।

(2) व्यावसायिक गुण (Professional qualities) —

(i) विषय का पूर्ण ज्ञान — कोई भी व्यक्ति विषय के ज्ञान के अभाव में पूर्ण शिक्षक नहीं हो सकता है। अतः, शिक्षक के लिए यह आवश्यक है की वह विद्यालय में जिस विषय का शिक्षण - कार्य करे उसका उसको पूर्ण ज्ञान हो।

(ii) व्यावसायिक प्रशिक्षण — अपने व्यावसायिक कौशल की वृद्धि के लिए शिक्षक को प्रशिक्षण देना आवश्यक है। इसलिए प्रत्येक शिक्षा - पद्धति में प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

(iv) पाठ्य - क्रम - सहगामी क्रियाओं में रुचि — आज का शिक्षण - कार्य कक्षा - कक्ष में दिये जाने वाले निर्देशों तक ही सीमित नहीं है, वरन् इससे कहीं अधिक माना जाता है। आधुनिक विद्यालय शिक्षकों से यह अपेक्षा करते हैं की वे विषयों का ज्ञान प्रदान करने के अतिरिक्त, कक्षा - कक्ष के बाहर की क्रियाओं के संगठन एवं संचालन का भी कार्य करें। जैसे खेल - कूद, नाटक, पाठ - विवाद, भ्रमण आदि क्रियाओं का पाठ्य - क्रम तथा विद्यालय के नियमित कार्य से संबंधित कर दिया गया है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner